ISSN : 2583-2948

समय के समर में व्याकरण

डॉ॰ अनु मेहता
आनंद, गुजरात
फोन – 9510364844

मुहावरे टूट रहे हैं और कहावतें कुछ चटक रही हैं।

सर्वनाम गुमसुम से हैं , संज्ञाएं कहीं भटक रही हैं।

उपमाओं की डालियों पर विशेषणों के हैं पुष्प लदे

बहुवचनों की संकरी गलियों में क्रियाएं भटक रही है।

विरुद्धार्थी की गुटबंदी में समानार्थी कब से खो गए हैं ,

शब्दों के चौराहे में अर्थों की दुविधा खटक रही है।

समास उलझा विग्रह में , संधि भी विच्छेद पर अड़ी हुई है,

अव्यय अविचल खड़ा है,व्याकरण पांव पटक रही है।

मुंह पर उपसर्गों की तारीफ, पीठ पर प्रत्यय का वार ,

धृतराष्ट्र की लिपि से त्रस्त मात्राएं कंधा झटक रही हैं।